- ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू

परमपिता परमात्मा शिव के

अव्यक्त पालना की स्वर्णिम जयंती

50 साल के वे अविस्मरणीय पल...

जिस भगवान को कभी पुकारते थे, जिसके आने की राह तकते थे, वो स्वयं पहले साकार प्रजापिता के तन में आया। उसने आकर हमें अभिभूत किया। उसने तीनों रूपों... परमपिता, परमशिक्षक और परमसद्गुरू के माध्यम से हमें पालना दी। भाग्यवान थे वे ब्रह्मावत्स जो उनकी साकार पालना के अधिकारी बने।

1969 से जब से ब्रह्मा बाबा ने अव्यक्त स्वरूप धारण किया तो उनके सम्पूर्ण फरिश्ते रूप में प्रवेश करके शिव बाबा पुनः दादी हृदयमोहिनी जी के तन में अवतरित होने लगे और यही सिलसिला अब तक चलता रहा। उन्होंने राजयोग की सूक्ष्म स्थितियों का ज्ञान दिया। एक-एक आत्मा को वरदान दिए। इस पालना के अब 50 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। वे भाग्यवान हैं जिन्होंने अपने परमपिता से दृष्टि ली और वरदानों से अपनी झोली भरी।

ये परमात्म कार्य 83 वर्षों से अनवरत रूप से चला आ रहा है। पहले साकार, फिर अव्यक्त और अब अति सूक्ष्म पालना। इसका संक्षिप्त वर्णन यहाँ प्रस्तुत है :-

परमात्मा को देखा धरा पर अवतरित होते

जब ब्रह्मा बाबा अव्यक्त हुए तो पहले कुछ वर्षों में शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा जिन्हें हम बापदादा कहते हैं, सप्ताह में दो बार अवतरित हुआ करते थे। हमने उनको हज़ारों बार साकार में अवतरित होते देखा। उन्होंने ज्ञान की गंगा बहायी। सृष्टि के सूक्ष्म रहस्यों को हमारे समक्ष खोला। जीवन में निश्चिंत कैसे रहें, अनेक विधियाँ सुनायी। तनाव मुक्त, बेफिक्र बादशाह बनने का राज़ समझाया। अध्यात्म की सर्वश्रेष्ठ स्थिति साक्षीभाव में सबको स्थित किया। ऐसी कोई ज्ञान की गुह्य बात नहीं बची जो उन्होंने नहीं बतायी। 'जो बाप सारे संसार का बोझ उठाने वाला है, क्या अपने बच्चों का बोझ नहीं उठायेगा!' ये महावाक्य सुनाकर सभी के बोझ हर लिए। जब हज़ारों की सभा में बाबा ने ये बात कही तो उनके प्यार में सभी मग्न हो गए और बोझमुक्त हो गए।

महान आत्माओं से मिलन मनाते देखा

वे सर्वशक्तिवान हैं, त्रिकालदर्शी हैं, निराकार सृष्टि के बीज हैं, सबके परमपूज्य ईश्वर हैं, परंतु जब वे धरा पर आते थे तो अपना भगवानपन परमधाम में छोड़कर अपने परिवार के बीच आते थे, महान आत्माओं के मध्य आते थे और बार-बार याद दिलाते थे कि मैं तुम्हारा निराकार परमपिता हूँ। मैं तुम महानात्माओं से मिलने आया हूँ। मैं अपने परिवार में आया हूँ। और यह सुनकर 25 से 30 हज़ार भाई बहनों की सभा अपने परमपिता के प्रेम की तरंगों में लहरा उठती थी। हरेक को अनुभव होता था कि आज तो बाबा प्यार के सागर थे। वे मुझे बहुत प्यार कर रहे थे। एक साथ हज़ारों-हज़ारों को प्यार की अनुभूति करा देना, ये दिव्य कर्म केवल प्यार के सागर का ही हो सकता है।

उन्होंने हमारे स्वमान को जगाया

उन्होंने हमारे स्वमान को जगाया। हम सबकुछ भूल चुके थे। माया के वश हो गए थे। शास्त्रों में इन बातों का इन शब्दों में वर्णन किया गया है कि ब्रह्मा भी चिरनिद्रा में सो गए। विष्णु जी भी लंबेकाल निद्रा में लीन हो गए। हम सभी जो महान आत्माएं थीं, वो विस्मृत होकर विकारों की गोद में अज्ञान निद्रा में सो गयी थीं। तब उन्होंने आकर हमें श्रेष्ठ स्मृतियां दिलाकर जगाया। हमारी सोयी हुई शक्तियों को जगाया। कहा - बच्चे, तुम साधारण नहीं हो, देवकुल की महान आत्मा हो। तुम ईश्वरीय शक्तियों से भरपूर मास्टर सर्वशक्तिवान हो।

शिव शक्ति हो, ये कहकर ऊँचा उठाया

उन्होंने हमें समृति दिलायी कि तुम शिव शक्ति सेना हो। तुम्हारा सुप्रीम कमाण्डर स्वयं सर्वशक्तिवान है। माया चाहे कितनी भी पॉवरफुल क्यों ना हो, तुम्हारी विजय निश्चित है। यह सुनकर लाखों ब्रह्मावत्स

कामजीत, क्रोधमुक्त, अहंकार से परे और मैं-पन के त्यागी बन गए। धन्य हैं वे ब्रह्मावत्स जिन्होंने सम्मुख भगवान की मधुर वाणी सुनी। जो उनकी अमृत वर्षा में भीगकर पतित से पावन हो गए, अमर हो गए। जिन्होंने उनकी प्यार भरी दृष्टि पाकर स्वयं को निहाल कर लिया। जब वे दृष्टि देते थे तो कोई विघ्नों से मुक्त हो जाता था, तो कोई बीमारियों से मुक्त हो जाता था, कोई अशरीरी होकर गहन शांति की अनुभूति में चला जाता था, तो कोई योगयुक्त होकर सभी दुःखों से मुक्त हो जाता था। ये जिन्होंने अनुभव किया, उनकी तो सोई हुई तकदीर ही जग गयी।

शांति के सागर से गहन शांति की अनुभूति

हमने देखा कि जब 30 हज़ार की सभा में उनका अवतरण होता था तो चारो ओर गहन शांति छा जाती थी। सभी के मन निर्संकल्प हो जाते थे। जब वे दृष्टि देते थे तो अनेक आत्माओं को उनसे विभिन्न वरदान मिल जाते थे। किसी को योगी भव, किसी को निर्विघ्न भव, किसी को विजयी भव का वरदान मिला, तो कोई सदा के लिए पवित्र हो गए। एक सुन्दर महावाक्य आप सभी के लिए प्रस्तुत है - जो बच्चे मास्टर सर्वशक्तिवान के नशे में रहते हैं, विघ्न व समस्याएं उनके पास आ नहीं सकती और सफलता उनके आगे-पीछे घूमती है। ये बातें सुनकर हम बहुत शक्तिशाली और निश्चिंत हो गये।

अनसुलझी पहेली को सहज सुलझाया

कुछ ऐसे रहस्य हैं जहाँ तक मनोवैज्ञानिक सोच भी नहीं पाते। बाबा ने कहा - तुम सवेरे 3 से 4 बजे तक जितना चाहो मुझसे मिलन मना सकते हो। मैं परम सद्गुरू भोलानाथ बनकर बैठता हूँ। मुझसे जो चाहो वो ले सकते हो और इसका अनुभव लाखों योगी आत्माओं ने किया।

दिलायी वरदानी स्वरूप की याद

उन्होंने हमें वरदानी स्वरूप की याद दिलायी और एक सुंदर प्रैक्टिस करवायी कि रोज़ सवेरे उठकर संकल्प करो कि मेरे साथ सबकुछ बहुत अच्छा होगा। उठते ही तीन स्मृतियों का तिलक लगाओ कि मैं विजयी रत्न हूँ, निर्विघ्न हूँ, सफलतामूर्त हूँ और अनेक आत्माओं ने अनुभव भी किया कि ये तीनों बातें जीवन के लिए वरदान बन गयी।

उन जैसा शिक्षक और कोई नहीं

उन्होंने हमें हमारे श्रेष्ठ भाग्य की स्मृतियाँ दिलायी और कहा - तुम सवेरे उठते ही याद किया करो कि मेरे जैसा भाग्यवान कोई नहीं। मैं बहुत सुखी हूँ, बहुत धनवान हूँ और ये याद करके खुशी में डांस किया करो। इससे तुम्हारा सोया हुआ भाग्य जाग जायेगा। तुम स्थूल धन से भी सम्पन्न हो जाओगे और तुम्हारे सुखों के दिन शुरू हो जायेंगे। ये थी परम शिक्षक की सूक्ष्म व श्रेष्ठ पढ़ाई। उनके अलावा ऐसा अन्य कोई पढ़ा ही नहीं सकता।

जन्म-जन्म की कामनायें हुईं पूर्ण

इन 50 वर्षों में उन्होंने अनेकों को महान योगी बनाकर आने वाले महापरिवर्तन के समय में सभी को मदद करने के लिए तैयार किया। कितनों को सम्पूर्ण पवित्र बनाकर कलियुग की गहरी रात में पूर्णिमा की तरह चमका दिया। करोड़ों मनुष्य आत्माओं ने नयी और सहज तनाव मुक्त जीवन जीने की कला सीखी। उनको सम्मुख बैठे देखकर अनेकों की जन्म-जन्म की कामनाएँ पूर्ण हो गयी। यह अनुपम अनुभूति सिवाय परमपिता के और कोई करा ही नहीं सकता।

कुछ भी कल्पना नहीं, सबकुछ परम सत्य

मैंने उनको इस धरा पर अवतरित होते हज़ारों बार देखा। मेरा जीवन उनकी इस अव्यक्त पालना से धन्य-धन्य हो गया। कुछ भी कल्पना नहीं, सबकुछ परम सत्य है। उन्होंने दिव्य बुद्धि प्रदान की। संकल्पों को महान बना दिया। दृष्टि में अलौकिकता भर दी। सभी विकारों को मूल सहित नष्ट कर दिया और इस अलौकिक जीवन में पवित्रता की सम्पूर्ण शक्ति प्रदान कर दी। मैंने ये सबकुछ अपनी आँखों से देखा, अलौकिक बुद्धि से अनुभव किया, केवल भावना नहीं। उनकी पालना को पाकर सचमुच जीवन खुशियों से भर गया। कभी-कभी सोचते हैं कि उनकी इस पालना का रिटर्न तो हम चारो युगों में भी नहीं दे पायेंगे। अब तो एक ही संकल्प रहता है कि उनके समान बनकर वैसी ही पालना सबको दें, जैसी परमपिता ने हमें दी है।

श्री रेणुका जी-नाहन(हि.प्र.)। श्री रेणुका जी अंतर्राष्ट्रीय मेले में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए माननीय मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर। साथ हैं विधानसभा अध्यक्ष डॉ. राजीव बिन्दल, ब्र.कु. रमा, ब्र.कु. शिवानी तथा अन्य।

सरधाना-उ.प्र.। नये सेवाकेन्द्र का उद्घाटन करने के पश्चात् सांसद संजीव बलियान को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. उषा।

नरवाना-हरियाणा। 'खुशियों की सौगात' विषयक कार्यक्रम के दौरान विधायक पिरथी सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए जींद सर्कल इंचार्ज ब्र.कु. विजय बहन। साथ हैं ब्र.कु. सीमा बहन तथा ब्र.कु. विजय भाई।

दिल्ली-बख्तावरपुर। विधान सभा क्षेत्र नरेला दिल्ली से विधायक शरद चौहान को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. गीता।

पटिया-ओडिशा। सेवाकेन्द्र के 10वें वार्षिकोत्सव पर सत्यव्रत मीनाकेतन, पंडित विश्वनाथ सतपथी, प्रो. एम.एस. ओगाले, प्रो. राजकिशोर मिश्रा आदि मेहमानों को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. लीना। साथ हैं ब्र.कु. गोलप, ब्र.कु. कल्पना, ब्र.कु. मधुस्मिता तथा ब्र.कु. विजया।

दिल्ली-ओम विहार। काउंसलर श्रीमती वीणा सबरवाल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. विमला।